International Journal of Education and Science Research Review
Volume-1, Issue-1 February 2014 ISSN 2348-6457

धर्म तथा वैश्विक आंतकवाद

डॉ सद्गुरू पुष्पम्
प्रवक्ता
राजनीति विज्ञान
एम.एम.कॉलेज, मोदीनगर, गाजियाबाद।

प्रस्तावना :-

'नमो धर्माय महते धर्मा धारयते प्रजा' महाभारत के उद्योग पर्व में वर्णित ये शब्द धर्म के व्यापकतम अर्थ को धारण करने वाले हैं, जिनसे आशय है कि व्यक्ति, समाज, संस्था, प्रेंति ब्रम्हाण्ड तथा लोक परलोक सभी को धारण करने वाले जो नियम हैं, वे धर्म हैं।
धर्म उर्दू शब्द 'मजहब' या अंग्रेजी शब्द 'रिलिजन' का हिन्दी पर्याय नहीं है।
धर्म के अर्थ में दो मुख्य विचारों का सुन्दर समावेश है- धार्मिक विश्वास एवं कर्तव्य। वैदिक विद्वानों ने कहा है - 'धर्म वह है जिससे अभ्युदय व निःश्रेयस की सिद्धि हो' अभ्युदय से लौकिक तथा निःश्रेयस से पारलौकिक उन्नति एवं कल्याण का बोध होता है। अतः धर्म जीवन के ऐहिक व पारलौकिक दोनों पहलुओं से सम्बन्धित हैं। धर्म उन सिद्धान्तों, तत्वों तथा जीवन प्रणाली को कह सकते हैं जिससे मानव जाति परमात्मा प्रदत्त शक्तियों के विकास से अपना ऐहिक जीवन सुखी बना सके,साथ ही मृत्यु के पश्चात् जीवात्मा जन्म-मरण के झंझटों में न पड़कर शान्ति व सुख का अनुभव कर सके।
भीष्म पितामह ने महाभारत के शान्तिपर्व (109:10-12) में कहा है कि अभ्युदय अपीणन,और धारण अर्थात् संरक्षण जिस उपाय से हो वही धर्म है। जो जगत की स्थिति का कारण हो और प्राणियों की प्रत्यक्ष उन्नति एवं मोक्ष प्राप्ति हेतु बने, वही धर्म है।
वैशेषिक सूत्र में महर्षि कणाद ने भी कहा है, 'यतोभ्युदयनि श्रेयस सिद्धिः सःधर्मः' अर्थात जो भौतिक तथा आध्यात्मिक उत्कर्ष का मार्गदर्शन करता है वही धर्म है।

धर्म के मूल तत्व

1. अलौकिक या अतिमानवीय शक्ति सत्ता में विश्वास धर्म का आधारभूत अनिवार्य तत्व है।
2. इस अलौकिक शक्ति या सत्ता की उपासना धर्म का दूसरा मूल तत्व है।
3. उन समस्त व्यक्तियों, स्थानों, पुस्तकों तथा वस्तुओं को पवित्र मानना जिसका सम्बन्ध इस शक्ति से है।

धर्म को भलीभांति के लिए धार्मिक निरेपक्षता एवं धार्मिक रूढ़िवाद पर भी दृष्टि डालना समीचीन होगा। समाज विज्ञानों में धर्म निरपेक्षता का एक निश्चित अर्थ लिया जाता है-निरपेक्षता या तटस्थता। 1780 में जार्ज होलियाक ने सर्वप्रथम 'सेकुलरिज्म'' शब्द का प्रयोग किया था। यह शब्द गिरिजाघरों तथा राज्य के मध्य संघर्ष के दौरान अस्तित्व में आया था। भारत में धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा का उदय ब्रिटिश काल से है। यद्यपि संविधान में कहीं भी धर्मनिरपेक्षता को परिभाषित नहीं किया गया है, फिर भी इसके तीन तत्व माने जा सकते हैं। 1. धर्म की स्वतंत्रता 2. नागरिकता 3. राज्य तथा धर्म की पृथकता।
इन तीनों तत्वों के सम्बन्ध राष्ट्र निर्माण की प्रकिया को चलाते हैं जो वर्षो तक चलती रहती है।
धार्मिक रूढ़िवाद आज हमारे देश में तथा पश्चिम एशिया में एक बहुप्रचलित पद है। अफगानिस्तान में तालिबान ने धर्म की दुहाई देकर सामाजिक न्याय का गला काट दिया। तालिबान ने सम्पूर्ण धार्मिक सहिष्णुता को ताक पर रख दिया। हमारे देश में रूढ़िवाद वस्तुतः हिन्दू तथा मुसलमानों का कट्टरवाद है। एक ओर हिन्दू कट्टरवादी हैं जो प्राचीन भारत को पुनः लाना चाहते हैं, तो दूसरी ओर मुस्लिम रूढ़िवादी हैं जो अपनी मौलिक अरब की संस्कृति को यहाँ स्थापित करना चाहते हैं। और तीसरी ओर एक और प्रक्रिया देश में चल रही है, यह प्रक्रिया आधुनिकीकरण की है। भारतीय परंपराओं का शीघ्रता से आधुनिकीकरण हो रहा है, संक्षेप में कहा जाये तो एक तरफ तीन प्रक्रियायें हैं-हिन्दू कट्टरवाद, मुस्लिम कट्टरवाद तथा आधुनिकीकरण तथा इन तीनों के बीच में भारतीय समाज है और उसकी आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक संस्कृति।
धार्मिक रूढ़िवाद की सैद्धान्तिक व्याख्या मोन्टगोमेरी वाट ने अपनी पुस्तक 'इस्लामिक फन्डामेन्टलिज्म एण्ड माडर्निटी-1983' में की। जब किसी धर्म विशेष के मतावलम्बी सारी दुनिया को अपने धर्म की दृष्टि में ही देखते हैं तो यह रूढ़िवाद है। वास्तव में रूढ़िवाद और कुछ न होकर कट्टरपंथ का चरम स्वरूप है। रूढ़िवादी न केवल अपने धर्म को वरन् सम्पूर्ण समाज को रूढ़िवादिता की दृष्टि से देखते हैं। इसमें गैर धार्मिक मसले भी आ जाते हैं। जब भारतीय रूढ़िवाद पर चर्चा होती है तो अयोध्या में 6 दिसंबर 1992, जब विवादित ढांचा गिराया गया था, का उल्लेख अवश्य किया जाता है। मुस्लिम रूढ़िवाद का दृष्टान्त कश्मीर में चलने वाले जेहाद से मिलता है। उल्लेखीय है कि रूढ़िवाद का परिणाम अन्त में आतंकवाद को जन्म देता है। पाकिस्तान ही नहीं पश्चिम एशिया के अनेक देशों में रूढ़िवादी इस्लाम के नाम पर आतंक फैला रहे हैं। जिस प्रकार रूढ़िवाद तर्क पर काम नहीं करता तथा धार्मिक असहिष्णुता को अपना औजार बनाता है, कमोवेश यही तरीका आतंकवादी भी आंतकवाद के प्रसार में अपनाते हैं।
आतंकवाद का जन्म व्यक्ति का समाज के साथ अतिएकीकरण अथवा अल्पएकीकरण के चलते होता है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से आतंकवाद का जन्म

प्रेंति की अनियम स्थिति के चलते होता है। मनोवैज्ञानिक रूप में आतंकवाद का जन्म मानस् की शून्यता से होता है। अर्थशास्त्रीय रूप में आतंकवाद का जन्म सापेक्षिक वंचितवाद की अनुभूति से होता है। आतंकवाद कोई विचारधारा या सिद्धान्त नहीं है, यह मूल्य आधारित अतिव्यवहृत, दुव्यर्वहृत तथा अशुद्ध परिवेष्टित अवधारणा है। यह एक संकल्पित रचना है जो भयादोहन तथा राजनीतिक परिवर्तन चाहती है। इसका प्रयोग शासन तथा शासित के आत्मविश्वास को पूर्णतः ध्वस्त करने के लिए किया जाता है। आंतकवादी का व्यक्तित्व कुछ नकारात्मक भावनाओं से परिपूर्ण रहता है-द्वेष, बदले की भावना, शीघ्र परिणाम के लिए उतावलापन एवं मानवीय संवेदनाओं का अभाव इत्यादि।

राष्ट्रपति रीगन ने कहा था, 'आतंकवाद एक बर्बर कार्यवाही है।आतंकवाद का समर्थन करने वाले वहशी लोग हैं।'

राम आहूजा के शब्दों में, 'आतंकवाद हिंसा या हिंसा की धमकी के उपयोग द्वारा लक्ष्य प्राप्ति के लिए संघर्ष या लड़ाई की एक विधि व रणनीति है एवं अपने शिकार में भय पैदा करना इसका मुख्य उद्देश्य है। यह क्रूर व्यवहार है जो मानवीय प्रतिमानों का पालन नहीं करता।'

वृहद हिन्दी कोष के अनुसार 'आतंकवाद राज्य अथवा विरोधी वर्ग को दबाने के लिए भयोत्पादक उपायों का अवलम्बन है।' परिभाषाएँ जो भी कहती हों आज आतंकवाद का भूत इतना हावी होता जा रहा है कि शायद ही कोई मनुष्य ऐसा बचा हो जिसे इससे भय न हो और आज के श्रेष्ठ विज्ञानवादी दौर में अपना जीवन पूर्ण सुरक्षित समझ रहा हो। इन आतंकवादी घटनाओं के पीछे एक दुःखद पहलू यह भी है कि एक समुदाय के लोगों द्वारा अपने धर्म के नाम पर, अपनी सभ्यता के नाम पर इस प्रकार की घटनाओं को अंजाम दिया जाता है। क्या कोई अथवा सभ्यता मानव प्राणी की सामूहिक नृशंस हत्या की इजाजत दे सकता है? शायद नहीं।इस आतंकवाद की समस्या के पीछे जो दूसरा चिंताजनक पहलू है वह यह है कि इन आतंकवादी संगठनों ने अपने को एक सूत्र में पिरोकर समूचे विश्व में अपना एक नेटवर्क स्थापित कर लिया है। इनके पास आर्थिक, सैनिक संसाधनों की भी कमी नहीं है, और इससे भी बढ़कर इन्हें कुछ राष्ट्रों का राजनैतिक संरक्षण भी मिल रहा है।

आतंकवाद की समस्या को एक ध्रुवीय विश्व के उदय ने और तीव्र बनाया है। विश्व के एकध्रुवीय स्वरूप में आतंकवाद के दंश को निम्नांकित रूप से बढ़ाया है-

1.प्रायः सभी आतंकवाद ग्रपु अल-कायदा के नेतृत्व के नीचे एकजुट हो गये हैं। अल-कायदा आतंकवादियों के एकध्रुवीय आधार का प्रतिनिधित्व करता हैं।

2. अमेरिका के एकपक्षीय तथा निरंकुश आक्रमणों ने अनेक असंतुष्ट तत्वों को जन्म दिया है। इन तत्वों ने अपनी सहानुभूति तथा समर्थन अनेक आतंकवादी समूहों को दिया है।

3. एकध्रुवीयता ने अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं विशेषकर संयुक्त राष्ट्र संघ की कमजोरियों को उजागार कर दिया हैं। ऐसी परिस्थिति में आतंकवाद के विरूद्ध सामूहिक कार्यवाही व्यावहारिक रूप में कठिन हो गयी है।

आतंकवाद के बुनियादी तत्वः-

1. एक विचारधारा
2. एक संगठित समूह तथा नेतृत्व
3. हिंसा, आतंक, भय।
4. प्रभुत्व, विद्रोह तथा आधिपत्य।

वैश्वीकरण और आतंकवाद :

वैश्वीकरण युग के प्रभावों ने धनी तथा गरीब के बीच की खाई को और गहरा तथा चौड़ा कर दिया है। वैश्वीकरण ने अधिक उदारींत वीजा शासन का प्रचलन शुरू कर दिया है, जिसकें परिणामस्वरूप आतंकवादियों का एक देश की सीमा से दूसरे देश की सीमा में प्रवेश सुलभ हो गया है।

सम्पूर्ण विश्व को वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने दो भागों में बांट दिया है, जिसके फलस्वरूप सभ्यताओं के टकराव को गहनता प्राप्त हुई है। विश्व बाजार का राष्ट्रीय तथा स्थानीय बाजारों के साथ हुए एकीकरण के साथ ही अनुचित सांरेंतिक जोखिम में पड़ गयी है। इन सबने कट्टरपंथियों के सिद्धान्त को पुनः जीवन्त कर दिया है। तथा गहरे जातीय सैद्धांतिक तथा धार्मिक बँटवारे को बल मिला। संचार तकनीकी के विकास ने भी आतंकवादी अभियानों को सहज बना दिया। और सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि विकासशील तथा अविकसित देशों में वैश्वीकरण ने बेरोजगारी की दर में वृद्धि की है। ऐसी स्थिति में नवयुवकों में असुरक्षा की भावना पैदा हुई है, और वे अपना भविष्य दूसरी दुनिया में तलाशने लगे हैं। जिससे आतंकवाद तथा धार्मिक कट्टरता को बल मिला है।

आतंकवाद के उदेश्य :-

1. अपने लक्ष्यों व आदर्शो का सघन प्रचार करना तथा उनके लिए जनता का अधिकाधिक समर्थन जुटाना।
2. देश की शान्ति व सुरक्षा को चोट पहुंचाना।
3. जनता में भय व असुरक्षा उत्पन्न करना।

आतंकवाद का वर्तमान स्वरूप :-

आज की स्थिति अत्यन्त विकट की स्थिति है। आज वही धर्म जो लौकिक-पारलौकिक सुखों एवं समृद्धि की प्राप्ति कराने वाला साधन माना गया, आज वह मानव जीवन व उसकी सभ्यता के विनाश का कारण बनता जा रहा है। धर्म के नाम पर समाज एवं देश को बांटने की प्रवृत्ति अब समाज एवं देश को नष्ट करने तक बढ़ गयी है और इस कुप्रवृत्ति ने मानव समाज के सामने जो स्वरूप अख्तियार किया है वह है आतंकवाद।

भारतीय संदर्भ में संसद पर हमले की बात हो या लाल किले की अक्षरधाम मन्दिर पर हमला हो या मुंबई में सात लोकल ट्रेनों में श्रृंखलाबद्ध विस्फोट या मालेगांव की घटना, समूचा भारत आतंकवाद की चपेट में है। वैश्विक स्तर पर ब्रिटेन में हुए श्रृंखलाबद्ध विस्फोट या अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर की घटना या चेचन्या खूनी संघर्ष समूचा विश्व इस आतंकवाद के सर्पदंश से पीड़ित है।

लश्कर-ए-तोइबा, जैश-ए-मोहम्मद, हरकत-उल-मुजाहिदीन, हरकत-उल- जेहाद-इस्लामी आदि संगठन ओसामा बिन लादेन द्वारा 1998 में गठित इन्टरनेशनल इस्लामिक फ्रंट के सदस्य बन गये हैं। अल-कायदा आज समूचे विश्व के आतंकी संगठनों का सर्वोच्च संगठन बन गया है। अब जरूरत है कि ऐसी विश्वव्यापी समस्या से एकजुट होकर निपटने की क्योंकि अलग-अलग देशों के द्वारा अलग-अलग दिशा में प्रयास करने से पूर्ण सफलता मिलना संदिग्ध है। जैसे आतंकवादी संगठनों ने मिलकर एक एकींत सुसंगठित ढांचा तैयार किया है, उसी प्रकार सभी राष्ट्रों को मिलकर इसके खिलाफ एक एकींत व केन्द्रीय ढांचा खड़ा करना होगा। इस समस्या का हल किसी एक पहलू पर ध्यान देने से नहीं हो सकता वरन् इनके सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक निहितार्थ तलाशने होंगे। समूचे विश्व को एकजुट होकर बिना किसी भेदभाव के सभी राष्ट्रों को सम्मिलित कर एक फ्रंट बनाकर मुहिम की शुरूआत करनी होगी। इसके अलावा सभी राष्ट्रों को अपने यहां कट्टरवादी/रूढ़िवादी ताकतों दृष्टिकोण समाप्त करना होगा। दुधारी तलवार पर चलने वाले शासकों को ध्यान में रखना होगा कि अब वे अधिक दिनों तक दोहरी नीति पर नहीं चल सकते। उन्हें अपनी नीयतों एवं नीतियों में पारदर्शिता लानी होगी तभी इस समस्या का स्थायी समाधान तलाश किया जा सकेगा।

आतंकवाद को समाप्त करने के सुझावः-

1. दृढ़ राजनैतिक इच्छाशक्ति।
2. आतंकवाद के खिलाफ अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय का कड़ा रूख।
3. आतंकवाद ग्रस्त क्षेत्र के समुचित विकास एवं वहां निवास करने वाले सभी समुदायों के समग्र विकास के लिए एक नीति।
4. धरातलीय बनावट के अनुसार आतंकवाद निरोधक दस्ते को प्रशिक्षित कर त्वरित कार्यवाही।
5. सामाजिक व धार्मिक कट्टरता की समाप्ति एवं सामाजिक संरचना में परिर्वतन।
6. रूढ़िवादिता की समाप्ति एवं शिक्षा का प्रचार-प्रसार।
7. आतंकवाद के प्रति विद्यमान एकांगी दृष्टिकोण का समाप्त किया जाना।
8. आतंकवाद को प्रश्रय देने वाले राष्ट्रों के खिलाफ सामूहिक घेराबन्दी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. महाभारत-वेदव्यास
2. वैशेषिक सूत्र-महर्षि कणाद
3. ईस्टर्न रिलिजन एण्ड वेस्टर्न थाट-डॉ0 एस0 राधोंष्णन
4. दैनिक जागरण समाचार पत्र
5. हिन्दुस्तान समाचार पत्र
6. इण्डिया टुडे
7. माया